मान-शान की इच्छारहित सेवा करने से होता पुण्य अर्जित - दादी जानकी

माउंट आबू, 5 दिसम्बर। ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा मान शान की इच्छारहित सेवा करने से ही पुण्य की पूंजी जमा होती है। यह बात उन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्थान के ज्ञान सरोवर अकादमी परिसर में मुंबई बीएसईएस अस्पताल, बीसी मेहता फाउंडेशन व ग्लोबल अस्पताल के संयुक्त तत्वावधान में मेडिटेशन रिट्रीट ऑन आयरन डिफिसिऐंसी विषय पर आयोजित पांच दिवसीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन के उदघाटन सत्र को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि जीवन में स्थाई तौर पर सुख शांति प्राप्त करने को मन-वचन-कर्म की पवित्रता होनी चाहिए। संकल्पों के शुद्ध होने से भगवान की स्मृति बनी रहती है जिससे मनोवृति पवित्र होती है व सत्यता, ईमानदारी, वफादारी, सहानुभूति आदि दिव्यगुणों का व्यवहारिक जीवनशैली में समावेश होने लगता है। पुण्य कर्म होने से ही हर परिस्थिति में अपनी अवस्था को श्रेष्ठ बनाए रखा जा सकता है।

आदित्य बिड़ला ग्रुप ऑफ कम्पनीज निदेशक श्रीमती राजश्री बिड़ला ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान की ओर से सिखाया जाने वाला राजयोग तनाव को कम व सुख शांति से जीवन में उमंग उत्साह बनाए रखने को पर्याप्त है। अध्यात्म में विश्वास रखने वाले प्रभूप्रेमी का बुद्धियोग ही परमात्मा से जुड़ता है। अध्यात्म स्वयं को जानने का रास्ता है। बुद्धि में अच्छे विचार, सकारात्मक भावनाओं का उदगम तभी होगा जब अपनी कमियों को अंदर से महसूस कर उन्हें छोड़ने का दृढ़ संकल्प लिया जाए। ईश्वर से वार्तालाप करने से तीसरा ज्ञान का नेत्र खुलता है अपने अंदर झांकने की प्रेरणा मिलती है।

मुंबई स्थित बीएसइएस अस्पताल निदेशक डॉ. अशोक मेहता ने कहा कि चिकित्सकों को तन के इलाज के साथ-साथ मन का भी ईलाज करना चाहिए। मन स्वस्थ होने से तन भी आसानी से स्वस्थ हो जाता है। राजयोग के अभ्यास से मन को श्रेष्ठ बनाने की कला सीखकर सभी चिकित्सक रोगियों का कल्याण कर सकते हैं।

ग्लोबल अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र चिकित्सा अधीक्षक डॉ. प्रताप मिढढा ने कहा कि चिकित्सकों की व्यवहार कुशलता के आधार पर दर्दी स्वयं की व्याधि की अनुकुलता व प्रतिकूलता महसूस करते है। इस अवसर पर डॉ. फरहा जीजीना, व्यापार एवं उद्योग प्रभाग राष्ट्रीय संयोजिका बी के योगिनी बहन, बी के गीता बहन, दीपा बहन ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

सम्मेलन में भाग लेने आए चिकित्सकों की ओर से विभिन्न कार्याशालाओं का आयोजन कर लोह तत्वों की कमी की वजह से होने वाली रक्त अल्पता के नुकसान व रक्त कमी की भरपाई के उपायों पर व्यापक स्तर पर चर्चा की जा रही है।